# इतिहास का शांति अध्ययन में योगदान एवं शांति अध्ययन की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रमों में उचित स्थान दिये जाने की आवश्यकता

हेमलता यादव*

**शांति स्थापना की आवश्यकता समकालीन मुद्दा नहीं है बल्कि प्रत्येक युग में इस के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। अथक प्रयासों द्वारा युद्ध की रूपरेखा बनाने वाले समाज को शांति के अग्रदूत में परिवर्तित किया जा सकता है, यदि आरंभिक शिक्षा के द्वारा शांति एवं अहिंसा के महत्त्व और आवश्यकता को बालमस्तिष्क में रोपित कर दिया जाए। पाठ्यक्रमों में युद्धों के अध्यायों के साथ समान रूप से शांति प्रयासों के बारे में भी पढ़ाया जाए। शांति और अहिंसा के सही अर्थों को विद्यार्थियों को समझाया जाए तो यह प्रयास शांतिपूर्ण परिवेश बनाने में सहायक सिद्ध होगा। महावीर, महात्मा बुद्ध, अशोक, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, सुंदरलाल बहुगुणा, मदर टेरेसा आदि ने जहां भारतीय आकाश को शांति की आभा से प्रकाशित किया वहीं नेलसन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, तेनंजिंग दलाई लामा, आंग सान सू की, कोफी अन्नान, हेनरी डुर्नेट, अल्फर्ड फ्राइड, जॉन एडम्स, ऐमिले बाल्च, आदि ने विश्व में शांति के परचम को लहराया। विज्ञान यातायात और संचार साधनों के तीव्र विकास ने भूमण्डलीकरण को बढ़ावा दिया। भूमण्डलीकरण के नकारात्मक आयामों ने शांति शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। शांति शिक्षा की आवश्यकता ने इतिहास द्वारा शांति शिक्षा में योगदान को पुनर्भाषित किया। भारतीय इतिहास एवं विश्व इतिहास में शांति, अहिंसा, सद्भावना, सहिष्णुता, समानता आदि के अनेकों उदाहरण विद्यमान हैं जिनका प्रयोग शांति शिक्षा के लिए किया जा सकता है। इतिहास विषय अब मात्र शासकों के कालक्रम एवं युद्ध की घटनाओं का वृतांत मात्र नहीं रह गया है। शांति शिक्षा में इतिहास अपनी प्रभावशाली भूमिका और अधिक प्रभावी ढंग से किस प्रकार निभा सकता है, इसके लिए शिक्षा के आरंभिक स्तर पर गहन प्रयासों की आवश्यकता है।**

* *शोध छात्रा* (इग्नू), 459 CI6 गोविंदपुरी, कालकाजी, नयी दिल्ली 110019

## इतिहास शांति अध्ययन की विषय-वस्तु के रूप में

इतिहास विषय की मदद से उस व्यवहार को विकसित किया जा सकता है, जो विद्यार्थियों को शांति निर्माता के रूप में विकसित कर सकता है। यदि कुछ वर्तमान संदर्भों को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए तो शांति अध्ययन की साम्रगी का प्रमुख स्रोत इतिहास ही है। बिना इतिहास की विषय-वस्तु के शांति अध्ययन की कल्पना करना व्यर्थ है। शांति अध्ययन में सबसे बड़ा योगदान इतिहास विषय का है, चाहे इसका प्रयोग शांति अध्ययन के महत्त्व को दर्शाने के लिए उदाहरण स्वरूप चिह्नित किया जाए या शांति के उपायों और प्रयासों के विवरण का ब्यौरा अथवा युद्धों की निर्दयता, संवेदनहीनता, मानवाधिकारों के हनन का वर्णन कर शांति के महत्त्व को स्थापित करने के लिए किया जाए। इतिहास ही मील का वह पत्थर है जो शांति अध्ययन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में योगदान स्वरूप अडिग खड़ा है।

साधारण व्यक्ति के कष्टों के निवारण हेतु मुक्तिमार्ग की खोज ने महात्मा बुद्ध को शांति दूत बना दिया। अहिंसा और त्याग के प्रकाश को उन्होंने न केवल भारतवर्ष बल्कि विश्व के अन्य भागों में फैलाया। महावीर स्वामी ने तो मानव ही नहीं समस्त सूक्ष्म जीवों के प्रति भी अहिंसक दृष्टिकोण अपनाया। सम्राट अशोक भीषण रक्तपात से रंजित विजय के नकारात्मक पहलु को देखकर युद्ध का त्याग कर शांति का प्रचारक बन गये। सम्राट अशोक ने विश्व के अन्य भागों में भी शांति स्थापना के लिए कई अभियान चलाए और अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को शांति संदेश फैलाने का कार्य सौंपा। भारत की सभ्यता, संस्कृति और सब धर्मों का आधार शांति है। भारत की महान विभूतियों ने शांति स्थापना को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक विकास का आधारभूत लक्ष्ण माना है। ब्रिटिश साम्राज्य की शोषणकारी हिंसात्मक नीतियों के विरुद्ध अहिंसात्मक आन्दोलन के अनूठे प्रयोग द्वारा देश को आज़ाद कराने का श्रेय महात्मा गाँधी को जाता है। महात्मा गाँधी ने अहिंसा को राजनीतिक, सामाजिक-आर्थिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर नये आयाम दिये और अहिंसा को भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की पहचान बना दिया। जवाहर लाल नेहरु ने शांति को विश्व शांति के रूप में प्रोत्साहन दिया और गुट निरपेक्षता ने आकार लिया। गाँधीजी के अहिंसात्मक तरीकों का प्रयोग सुन्दर लाल बहुगुणा ने पर्यावरण संरक्षण के लिए किया।[1] आज भी अन्ना हजारे द्वारा आम आदमी के लिए चलाये गए अहिंसात्मक आन्दोलन को मिला जनसमर्थन वर्तमान और भविष्य में अहिंसात्मक आंदोलनों की प्रासंगिकता सिद्ध करते हैं।

"विश्व इतिहास के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को फ्रांसीसी क्रांति, रूसी क्रांति, नात्सीवाद और हिटलर का उदय, यूरोप में राष्ट्रवाद, वियतनाम युद्ध, प्रथम एवं द्वितीय विश्व-युद्धों, भारत के विभाजन को समझना जैसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की मात्र जानकारी देने के साथ-साथ इनका संबंध "शांति स्थापना की आवश्यकता' के रूप में भी दिया जाना चाहिए"।[2]

अहिंसा एवं शांति अध्ययन के महत्त्व को समझते हुए 1989 में कोस्टा रीका वह पहला देश था, जिसने संवैधानिक रूप से अपनी सशस्त्र सेना को समाप्त किया। इतना ही नहीं 1970 में

शांति स्थापना हेतु विश्वविद्यालय का गठन किया, जिसमें शांति शिक्षा के पाठ्यक्रमों को पढ़ाना आरंभ किया।[3] यूनेस्को के पूर्व अध्यक्ष डॉ. डेविड एडम्स का मानना है कि युद्ध की शिक्षा, युद्ध प्रियता का महत्त्वपूर्ण कारण है।[4]

मशीनों, तकनीकी और वैज्ञानिक विकास के नाम पर मानवीय मूल्यों का हनन हुआ है। मशीनों ने भावनाओं को गहरा आघात पहुँचाया है। मानवीय भावनाओं पर हावी होती संख्यात्मक दृष्टि सरकार एवं मीडिया की रिपोर्ट में युद्ध एवं आपदा के समय मरने वाले और घायलों की संख्या के रूप में झलकती है, परंतु प्रत्येक व्यक्ति का प्रभावित परिवार दशकों तक हिंसा के जख्मों से उठती टीस को महसूस करता है।

मशीनीकरण, तकनीकी और विज्ञान के विकास ने जो हिंसक रूप लिया उसने मानव जीवन को ही नहीं पर्यावरण और जैविक विविधता को भी खतरे में डाल दिया। पर्यावरण असंतुलन से हमारी पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हुई और पृथ्वी को बीमार गृह की संज्ञा दी गई।[5] भारत में अहिंसा प्राणी मात्र तक ही सीमित नहीं वरन् वनस्पति जगत को भी अहिंसा की दृष्टि से देखा गया। वृक्षों के लिए शहीद होने का उदाहरण भारत में देखने को मिला।[6]

यूनेस्को ने विश्व शांति और मानव के सुरक्षित जीवन यापन के लिए जिन क्षेत्रों को आधार बनाया है, उसमें सबसे आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है शिक्षा।

शिक्षा ही वह प्राथमिक जरिया है, जिसकी सहायता से नवपीढ़ी द्वारा शांति, अहिंसा, सामाजिक सद्भावनाओं, महिलाओं के प्रति सम्मान, मानवीय अधिकारों, पर्यावरणीय सोच जैसे मूल्यों से रची-बसी भारतीय संस्कृति के अस्तित्व की रक्षा संभव है। प्राचीन काल से भारत अहिंसा और शांति स्थापना में विश्व का अग्रणी रहा है। गौतम बुद्ध और महावीर ने अहिंसा एवं शांति को धर्म में परिवर्तित कर इसके आध्यात्मिक प्रकाश को न केवल भारत बल्कि अन्य देशों में भी फैलाया। हिंसा के भयावह परिमाणों ने सम्राट अशोक को अहिंसा की राह दिखाई फिर स्वयं अशोक महान ने अहिंसा और शांति संदेशों को विश्व भर में फैलाया। अनेकों महान संतों ने अहिंसा और शांति को अपनाया एवं उसका प्रचार किया। भारत का प्राचीन इतिहास ही नहीं आधुनिक भारतीय इतिहास भी शांति और अहिंसा के अनेकों उदाहरणों को प्रस्तुत करता है। गाँधीजी ने अहिंसा को नया आयाम दिया। शक्तिशाली के समक्ष किस प्रकार अहिंसा कमजोर का शस्त्र बनती है, निशस्त्र रहकर भी वह कैसे विजय पा सकता है, अहिंसा का यह नया रूप गाँधीजी की देन है। अहिंसा, सत्य, स्वराज जैसे शब्दों की शक्ति को गाँधीजी ने विश्वव्यापी पहचान दी। इन शब्दों को ओक्सफॉर्ड डिक्शनरी में भी सम्मिलित किया गया। गाँधीजी ने अहिंसा के सिद्धांतों पर ही राष्ट्र निर्माण को बल दिया। शांति आंदोलन ने धीरे-धीरे व्यापक रूप धारण किया। बीसवीं शताब्दी जहां विश्व में दो विश्व युद्धों, हिरोशिमा-नागासाकी, शीतयुद्ध, खाड़ी युद्ध आदि अनको हिंसक घटनाओं का सिलसिलेवार मूक दर्शक थी, वहीं भारत में यह शांति आंदोलनों का नव सूत्रपात्र थी। भारत में चम्पारण से आरंभ हुए शांति आंदोलन-विरोध के नए अविष्कार के रूप में प्रतिस्थापित हुए। भारत की बीसवीं शताब्दी हिंसा के प्रश्न पर अहिंसा का प्रत्युत्तर सिद्ध हई।

शांति शिक्षा में चरित्र निर्माण आधार का कार्य करता है। शिक्षा व्यक्ति को परिस्थितियों का व्यावहारिक रूप से और बुद्धिमत्ता से निरीक्षण करना सिखाती है, व्यक्ति एवं समाज के विकास और चरित्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चरित्र निर्माण, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। नैतिक शिक्षा को आरंभिक पाठ्यक्रमों में स्थान दिया गया है, लेकिन उच्च माध्यमिक कक्षाओं में चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा का स्थान धीरे-धीरे व्यावसायिक शिक्षा ले लेती है। जीविकोपार्जन की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण भी है, परंतु चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा व्यक्ति को सहनशीलता, मानवता, सच्चाई और प्रेम पर आधारित जीवनयापन में सहायता करती है। व्यावसायिक शिक्षा ने जीवन, सुख-सुविधाओं एवं वेतन के स्तर को ऊपर उठाया तो है लेकिन साथ ही साथ इससे उत्पन्न प्रतिस्पर्धा ने कभी न खत्म होने वाली दौड़ में व्यक्ति को खड़ा कर दिया। परिणामस्वरूप क्रोध झुंझलाहट, चिड़चिड़ाहट, डिप्रेशन, अपराध, असंतुष्टि, हत्याओं, आत्महत्याओं आदि का स्तर भी ऊपर उठा है। अहिंसा विश्वास को जन्म देती है परंतु आज समाज में हिंसा ने अविश्वास का माहौल बना दिया है इस अविश्वास ने किसी न किसी रूप में हो हम सबको घेर रखा है। महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग सब कहीं न कहीं विश्वास रहित संदिग्ध माहौल में जी रहे हैं।

गाँधीजी 'ईश्वर पर विश्वास' को सत्य एवं सही शिक्षा की तरफ पहला कदम मानते थे।[7] यही विश्वास शिक्षा के माध्यम से समृद्ध होकर कठिन परिस्थितियों का सामना करने एवं सही निर्णय लेने में सहायक होता है। यही 'शिक्षा और विश्वास' व्यक्ति को घृणित कार्य करने से रोकने में सक्षम हो सकता है। क्रोध हिंसा है और यही हिंसा रूपी क्रोध बेलगाम होने के कारण आज आपराधिक मामलों के प्रतिशत को बढ़ाता जा रहा है। इसमें एक बड़ा भाग युवा-वर्ग का है, जो सही मार्गदर्शन के अभाव में हिंसक प्रवृत्तियों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, इसका प्रमुख कारण शिक्षा-नीति में लोच और शिक्षा-नीति के सही क्रियान्वयन का अभाव है।

शिक्षा का माध्यम केवल शक्ति के विकास पर केंद्रित होना खतरनाक परिस्थितियों का निर्माण करता है। बौद्धिक शक्ति एवं शारीरिक श्रम शक्ति के साथ आत्मशक्ति का विकास भी महत्त्वपूर्ण है। शोषण को समाज में उखाड़ फेंकने में अहिंसा एवं शांति के अध्ययन के महत्त्व का गाँधीजी ने वर्धा काँफ्रेंस में भी जिक्र किया था, जिसके परिणामस्वरूप नयी तालीम का आरंभ हुआ।[8]

शांति, मानव के सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। अनिश्चितताओं ने मनुष्य की सहनशीलता पर प्रश्न चिह्न लगा दिए हैं। युद्ध के दौरान भी जल्द से जल्द की शांति की चाह मानव द्वारा जीवन के प्रति लगाव और शांतिपूर्ण कुटुंबकीय जीवन की इच्छा के महत्त्व को दर्शाती है।

इतिहास लेखन पर मूलत: यह आरोप लगाया जाता है कि इतिहास में अधिकतर उन ही घटनाओं को महामंडित किया जाता है जिनसे शांति भंग हुई हो अथवा युद्धों के कारणों और परिणामों का वर्णन करना ही इतिहास की प्रवृति है। ऐतिहासिक लेखन में हिंसक घटनाओं, युद्धों, लड़ाइयों का विवरण शांतिपूर्ण घटनाओं के विवरण की तुलना में अत्यंत विशाल है। परंतु हाल के वर्षों में

आये बदलाव ने इतिहासकारों का रुख समाज और जनाधार की ओर मोड़ दिया है।[9] इतिहास लेखन के इस बदलते स्वरूप ने यह सिद्ध किया कि कालक्रमों, तिथियों और साम्राज्य के उत्कर्ष और अपकर्ष के क्रमवार ब्यौरों एवं राजनैतिक उथल-पुथल का वर्णन के रूप में पहचाने जाने वाले इतिहास का प्रयोग शांति स्थापना के लिए भी प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। यह सत्य है कि इतिहास वीभत्स युद्धों का प्रत्यक्षदर्शी है। परंतु इन युद्धों का वर्णन शांति प्रयासों के लिए चेतावनी स्वरूप किया जा सकता है, ताकि शांति-स्थापना को बल मिले। जैसे प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों नें शीतयुद्ध के दौरान उत्पन्न होने वाले आक्रामक संकटों को तृतीय विश्व युद्ध का रूप लेने से रोका (क्यूबा का संकट, अफ़गानिस्तान का संकट, खाड़ी युद्ध)। समस्त विश्व के शांति प्रयासों ने इन चिंगारियों को विश्व युद्ध बनाने से रोका।

## माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रमों में शांति अध्ययन के विशेष स्थान की आवश्यकता

सामाजिक परिवर्तन अनवरत प्रक्रिया है और सामाजिक परिवर्तन संघर्ष को जन्म देते हैं। संघर्ष समाधान और संघर्ष प्रबंधन का परिचय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक एवं उच्चतम माध्यमिक कक्षाओं में प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी में देने की आवश्यकता है। यहां विद्यार्थियों के ऊपर बढ़ते पाठ्यक्रम के भार को भी देखना होगा। पाठ्यक्रम के सही प्रबंधन एवं कुछ कम आवश्यक तत्वों को हटाकर शांति अध्ययन को अनिवार्य करना इस समय की सबसे बड़ी चुनौती भी है और आवश्यकता भी। हाल के वर्षों में बढ़ते अपराधीकरण मुख्यत: जुवेनाइल क्राइम ने शैक्षिणिक पद्धति एवं माध्यमिक शिक्षा स्तरों पर शांति शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। प्राकृतिक आपदाओं एवं मानव निर्मित आपदाओं के समय उत्पन्न हिंसक घटनाएं भी आपदा प्रबंधन में शांति अध्ययन और संघर्ष अध्ययन की आवश्यता पर बल देती है। समाज में संघर्षों का होना स्वाभाविक है। परंतु संघर्षों पर नियंत्रण न होना समाज को जीवनयापन करने योग्य नहीं रहने देता। संघर्ष अनवरत चलते रहते हैं। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, संदर्भों में विद्वानों में भी आपसी संघर्ष का स्थान रहता है। सभी संघर्ष विनाशकारी हों, यह आवश्यक नहीं। संघर्ष के कई उद्देश्य हो सकते हैं। न्याय, समानता के लिए निरंतर संघर्ष होते रहे हैं। परंतु संघर्षों के साथ अहिंसा को जोड़कर जो पथ गाँधीजी ने दिखाया, आज उस पथ पर युवा पीढ़ी को अग्रसर करने का कार्यभार शिक्षा ही उठा सकती है, वर्तमान उपभोक्तावादी आत्मकेंद्रित संस्कृति ने मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है। संवेदनाओं, मानवीय मूल्यों, सहृदय भावनाओं के अभाव में शांति स्थापना और मानवाधिकारों के सार्वभौमिक विकास की कल्पना करना भी व्यर्थ है। आज मानव ने आत्मकेंद्रित स्वार्थ पूर्ति के लिए न केवल संवेदनाओं, मानवीय मूल्यों और भ्रातृत्व भावना को अपनी स्वार्थ लोलुपता की अग्नि में झोंक दिया बल्कि अपने पृथ्वी ग्रह के प्राकृतिक आवरण को भी खरोंच कर उखाड़ फेंका। जिस प्रकार पर्यावरण शिक्षा आपदा प्रबंधन को विद्यालय पाठ्यक्रम में स्थान मिला, उसी प्रकार अहिंसा एवं शांति शिक्षा और संघर्ष प्रबंधन को भी सही स्थान

देने का वक्त आ गया है। यदि अहिंसा को बाल मस्तिष्क में रोपण करने में हमारी शिक्षा प्रणाली सफल हो गयी तो समाज में फैले अपराधीकरण पर तो रोक लगेगी ही, इससे हमारे लोकतंत्र को भी मजबूती मिलेगी।

यदि युद्धों और लड़ाइयों के उदाहरण इतिहास में मिलते हैं तो शांति के महत्त्व, नैतिकता, सदाचार के उदाहरण भी इतिहास ही हमें देता है। फर्क है कि हम किस प्रकार और किस लिए इतिहास का प्रयोग करते हैं। विगत दशक में भारतीय उच्च शिक्षा में शांति अध्ययन संघर्ष समाधान, संघर्ष प्रबंधन, शांति और अहिंसा संबंधी कार्यक्रमों की अध्ययन सामग्री में इतिहास विषय का प्रयोग नींव के समान किया जा रहा है।[10] यहां विचार करने योग्य तथ्य है कि शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह उच्च शिक्षा तक नहीं पहुँच पाता। परंतु यह बड़ा समूह समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तात्पर्य है कि शांति अध्ययन की आवश्यकता माध्यमिक स्तर पर ज़्यादा महसूस की जा रही है। वर्तमान समाज के नकारात्मक विकृत रूप, हिंसा के प्रति आकर्षित होती युवा पीढ़ी, महिलाओं के सम्मान पर लगते प्रश्न चिह्न, सहनशीलता और डिप्रेशन के कारण बढ़ती हत्याओं और आत्महत्याओं के कारण शांति और अहिंसा के अध्ययन को माध्यमिक स्तर पर आवश्यकता के रूप में देखा जाना चाहिए।

## शांति शिक्षा का अर्थ एवं तत्कालीन आवश्यकता

शांति स्थापना का अर्थ मात्र युद्धों और जंगों का ना होना ही नहीं है बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक भय से मुक्ति ही सर्वोच्च शांति है। शांति वही स्थिति है, जहां मानव को जीवन यापन के उचित अवसर प्राप्त हों। शांति स्थापना का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है, क्योंकि हमारी पूर्ववर्ती बीसवीं सदी ने विश्व युद्धों में त्रासदी के असंख्य, असहनीय अनुभवों को भोगा है। हिरोशिमा-नागासाकी मानवता के हृदय से रिसने वाले नासूर हैं। अहिंसा के सर्वव्यापी महत्त्व को बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों ने महत्त्वपूर्ण समझा और इसे कई शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाया जाने लगा। परंतु शांति शिक्षा की आवश्यकता उच्च शिक्षण संस्थानों से अधिक माध्यमिक शिक्षा स्तर पर है। भारत की शिक्षा व्यवस्था के अनुसार माध्यमिक स्तर के बाद उच्च माध्यमिक एवं स्नातक शिक्षा क्षेत्र में विषयों का वैकल्पिक चुनाव करना पड़ता है। अत: उच्च शिक्षा पर शांति शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत घट जाता है आज के समाज में बढ़ते अपराधीकरण, भ्रष्टाचार और अहिंसक गतिविधियों को रोकने के लिए शांति शिक्षा को माध्यमिक अनिवार्य शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए इसके लिए इतिहास विषय ही सबसे अधिक उपयुक्त है।

शांति शिक्षा के लिए हिंसा को समझना हिंसा के निवारण के लिए महत्त्वपूर्ण है। जॉन गल्टंग ने हिंसा को दो भागो में बांटा है-डायरेक्ट हिंसा और स्ट्रक्चरल हिंसा। डायरेक्ट हिंसा, जिसमें किसी व्यक्ति या समूह को शारीरिक या मानसिक पीड़ा सहन करनी पड़ती है। स्ट्रक्चरल हिंसा के अंतर्गत किसी संस्था या समाज द्वारा असमानता के रूप में व्यक्तियों का शोषण किया जाता है।[11] जैसे भारत में महिलाओं एवं दलितों के साथ हिंसक घटनाएं। जॉन गल्टंग ने 1968 में जरनल ऑफ पीस रिसर्च निकाला। इसी प्रकार जॉन बर्टन ने 1966 में शांति

प्रयासों को बढ़ावा देते हुए लंडन यूनीवर्सिटी में सेंटर फॉर एनालिसिस ऑफ कॉन्फ्लिक्ट की स्थापना की।[12] हिंसा की समझ शांति अध्ययन के प्रयासों की रूपरेखा बनाने में योगदान देती है। शांति अध्ययन में गाँधीजी का योगदान विद्वानों में बहस, अनुसंधानों एवं प्रशंसा का विषय रहा है। अरस्तु ने कहा था कि हम युद्ध इसलिए करते हैं ताकि शांति से रह सकें, क्या हम युद्ध के स्थान पर मित्रता और सहयोग की संस्कृति अपनाकर शांति से नहीं रह सकते।

शांति की अवधारणा नवीन नहीं है। इतिहास साक्षी है कि रक्त की पिपासा शांति से ही बुझी है– महाभारत के युद्ध से पहले शांति का प्रस्ताव हो या कलिंग विजय के उपरांत अशोक द्वारा शांति की चाह, महात्मा बुद्ध एवं स्वामी महावीर की शांति-खोज हो या अकबर की दीन-ए-इलाही एवं राजपूत नीति में शांति की झलक हो, स्वामी विवेकानंद का विश्व शांति संदेश हो या गाँधीजी द्वारा अपने जीवन का शांति के लिए समर्पण। समाज में शांति का अस्तिव अनवरत चला आ रहा है तो किन कारणों से वर्तमान में शांति शिक्षा के आगाज़ की आवश्यकता बालकों के लिए महत्त्वपूर्ण हो गई है। इस प्रश्न का उत्तर हमें कॉंफ्रेंस हॉलों में नहीं बल्कि विद्यालयों और विद्यालयों के आस-पास घटित घटनाओं में मिलेगा। आज विद्यालय हिंसा की कार्यशालाओं में बदलते नज़र आ रहे हैं। नाबालिग अपराधों का बढ़ता ग्राफ असंतोष, असुरक्षा, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के ध्वंस का द्योतक है। हिंसा का प्रारंभ विधालय से भी कहीं पहले बालकों के घर से आरंभ हो जाता है। घरेलू हिंसा, हिंसक वार्तालाप, जनसंचार के साधनों में हिंसा का प्रचार बालकों के मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है। अपने शोधकार्य के सर्वे के दौरान स्कूली छात्रों से बात करते समय चौंकाने वाले तथ्य सामने आये कि किस प्रकार स्कूली छात्रों को हिंसा एवं हिंसा से जुड़ी गतिविधियों में आनंद आने लगा है। विद्यालयों में बालकों के बीच छोटी-छोटी बातों में लड़ाई झगड़ों का विकराल रूप लेना आम बात हो गई है। क्रोध की सीमा को लांघ कर अपने अध्यापकों पर हावी होना और उन्हें धमकी तक देना आम बात है। 2013 के आरंभ में दक्षिणी दिल्ली के एक राजकीय विद्यालय में एक अध्यापक ने एक बालक की गलती पर उसकी पिटाई कर दी। अगले ही दिन कुछ लोग आए और विद्यालय परिसर में अध्यापक की पिटाई करने लगे। अध्यापक का व्यवहार भी निदंनीय है परंतु अब तक अध्यापक की चपत विद्यार्थियों के लिए भविष्य में पढ़ने वाली परिस्थितियों की मार से बचने का तरीका थी। इस प्रकार की घटनाओं और अध्यापकों के प्रति विद्यार्थियों के बदलते दृष्टिकोण ने अध्यापकों के मन में भय, अपने कर्तव्य से विमुखता एवं विद्याथियों के मध्य उच्च शृंखलता को बढ़ावा दिया। इस घटना को कुछ समय ही बीता था कि उसी विद्यालय के चौकीदार पर हमला हुआ उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। बहुत मुश्किल से विद्यालय का प्रशासन इस बात को गुप्त रख पाने में कामयाब हुआ। यह तो मात्र एक विद्यालय का उदाहरण है लेकिन लगभग हर दूसरे विद्यालय में हिंसा से जुड़ी अनेक घटनाओं के उदाहरण मिलेंगे। एक दूसरे विद्यालय के आठवीं कक्षा के विद्यार्थी ने बताया कि कई बच्चे विद्यालय में दातों के बीच ब्लेड का आधा हिस्सा तोड़कर रखते हैं और

लड़ाई या झगड़े में सीधा ब्लेड मारकर भाग जाते हैं। अपने सर्वे के दौरान हिंसा के कारणों को जानने के प्रयास में मुझे विद्यालयों में नशे की गहरी होती गर्त के बारे में भी पता चला। उदाहरण बढ़ते जाएंगे पर इन उदाहरणों का उद्देश्य घटनाओं का ब्यौरा नहीं वरन् शांति शिक्षा की प्रबल एवं आपातकालीन आवश्यकता पर बल देना है।

इलाज से बचाव बेहतर है, इसलिए कानून व्यवस्था और पुलिस व्यवस्था बाल अपराध ग्रहों को बेहतर बनाने के साथ-साथ यदि शिक्षा को बेहतर बनाया जाए और इस से भी अधिक शिक्षा को प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जाए तो अवश्य ही सकारात्मक परिणाम दृष्टिगोचर होंगे। गाँधीजी के अनुसार अहिंसा ही सत्य और सत्याग्रह को पाने का मार्ग है। यह केवल राजनीतिक कार्यों में सफलता पाने का माध्यम नहीं वरन् सत्य को पाने का एक मात्र नैतिक साधन हैं। बच्चों की मासूमियत ने गाँधीजी को मुग्ध किया। उनके अनुसार बालक सत्य और अहिंसा के वास्तविक अभ्यार्थी हैं। टॉलस्टॉय फार्म में शिक्षक के रूप में गाँधीजी ने व्यक्तिव निर्माण को शिक्षा की नींव बताया। उनके अनुसार यदि शिक्षा की नींव मजबूत है तो बच्चे बाकि सारी चीजें अपने आप या अपने साथियों के सहयोग से सीख जाते हैं।[13] गाँधीजी मानते हैं कि शिक्षा बालकों में मानवता के बीज को प्रस्फुटित करती है- "बालकों को किसी नायक की प्रतिकृति बनाना अनुशासन नहीं है। इससे आदतों को विकसित करना संभव नहीं। यदि बालकों को बंदियों की भाँति पढ़ाया जाए तो वह बालकों का विकास नहीं वरन् उनकी प्रतिभा का ह्रास होगा।"[14]

बालकों को जो शिक्षा दी जाए उस शिक्षा के कारण उनके समक्ष हों, फिर महान विभूतियों के महान कार्यों को उनके सामने प्रस्तुत कर कारणों को ठोस आधार दिये जाएं। इससे बालक मजबूत नागरिक बनेंगे, जो कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय ले सकेंगे। विद्यार्थियों में व्यक्तित्व निर्माण, विविधता से परिपूर्ण देश में मिल-जुल कर रहना सीखने की कला, देश एवं समाज के प्रति कर्त्तव्य, जीवन शैली में शांतिपूर्ण स्थिरता के महत्त्व को सिखाने की ज़रूरत है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बालकों पर पढ़ाई का अतिरिक्त भार डालने के स्थान पर इतिहास विषय को ही इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाए कि युद्धों का वर्णन करते समय भी शांति के महत्त्व की ओर संकेत नज़र आये। भारतीय इतिहास और सांस्कृति मूल्यों के लगभग प्रत्येक पहलू को विद्यार्थियों के समक्ष जीवित करने में सक्षम हैं। व्यक्तिव निर्माण में सहायता के लिए भारतीय इतिहास अभूतपूर्ण व्यक्तियों के उदाहरणों से भरा हुआ है।

भारतीय संस्कृति ने सदैव सोहार्दपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम' का सूत्र दिया, गाँधीजी का सम्पूर्ण जीवन ही शांति एवं अहिंसा का प्रयास है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भी शांतिपूर्ण सफलता का उत्तम उदाहरण है। गाँधीजी ने टॉलस्टॉय फॉर्म पर अध्यापन के अनुभव से कहा है कि विद्यार्थियों में व्यक्तिव निर्माण शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। यदि अनुशासन, आत्मनियंत्रण, परिश्रम और संवेदनशीलता को शिक्षा के आरंभिक चरणों के रूप में प्रतिस्थापित किया जाएगा तो अहिंसात्मक पोषण, नैतिक मूल्यों, सकारात्मक सोच से सिंचित बालरूपी पौधा अवश्य ही भविष्य में शांत घने छायादार वन में परिवर्तित होगा।

## संदर्भ


1. फ्रांसीसी क्रांति-पृ.3, रूसी क्रांति-पृ. 25, नात्सीवाद और हिटलर-पृ. 49, भारत और समकालीन विश्व-1, एनसीईआरटी, पाठ्यपुस्तक, कक्षा 9, 2006.
2. यूरोप में राष्ट्रवाद-पृ.3, वियतनाम युद्ध पृ. 44,47, भारत और समकालीन विश्व-2, एनसीईआरटी, पाठ्यपुस्तक कक्षा 10, 2007.
3. विभाजन को समझाना- पृ. 376, भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग 3, एनसीईआरटी, पाठ्यपुस्तक, कक्षा 12, 2007.
4. यूनीवर्सिटी ऑफ पीस (यूपीईएसीई), कोस्टा रिका.
5. Source- www.culture-of-peace.infoèkindex.html.
6. नानी पालकीवाला, द एलिंग प्लैनेट: द ग्रीन मूवमेंट्स् रोल, द *इंडियन ऐक्सप्रेस,* 24 नवबंर 1994.
7. सुन्दर लाल बहुगुणा, सभ्यता का संकट और संस्कृति का संदेश पर्यावरण के संदर्भ में "डा. राजेन्द्र प्रसाद व्याख्यान माला, 1986, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली, 1986, पृष्ठ- 24-25" जोधपुर के महाराज अजय सिंह के आदेश पर बिश्नोइयों के खिजड़ी गाँव में खेजड़ी के पेड़ काटने का आदेश दिया ताकि महल के लिए लकड़ी का प्रबंध हो सके। अमृता देवी बिश्नोई एवं उनकी तीन बेटियाँ बारी-बारी पेड़ों से लिपट गईं और बलिदान दे दिया। एक के बाद एक 363 बिश्नोइयों ने पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ दीं।
8. रामचन्द्र गुहा, "अनक्वाइट वुड्स" ऑक्सफोर्ड, 1989, "रेनी गाँव (जिला चमौली) में जंगल की कटाई के विरोध में 27 औरतों ने श्रीमती गौरादेवी के नेतृत्व में बिना जान की परवाह किये चिपको आंदोलन शुरू किया। 26 मार्च 1974 के इस आन्दोलन ने स्वतंत्र भारत के प्रथम पर्यावरण आंदोलन की नींव रखी".
7. महात्मा गाँधी, *"द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रुथ"* महादेव देसाई द्वारा अनुवादित, लेक्सिकन बुक्स, नयी दिल्ली 2011, पृ. 12 पृ. 312, 316.
8. नवभारत विद्यालय, वर्धा सम्मेलन, 22-23 अक्तूबर 1937.
9. गुहा रंजीत एंड गायत्री चक्रवर्ती स्पिवक, 1988, सलेक्टिड सबल्टर्न स्टडीज़, ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस.
10. इग्नू एवं गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, 2011, गाँधियन स्टडीज़ प्रोग्राम.
11. गल्टंग जॉन, पीस बाय पीसफुल मीन्स, पीस एंड कनफ्लिक्ट, डवलपमेंट एंड सिविलाइज़ेशन, सेज पब्लिकेशन, लंदन, 1996.
12. बॉन्ड्यूरैंट जॉन वी., 1965, कॉन्क्वैस्ट ऑफ वॉयलैंस: द गाँधियन फिलॉसफी ऑफ कनफ्लिक्ट, युनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रैस, बर्कले.
13. महात्मा गाँधी, "द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रुथ" महादेव देसाई द्वारा अनुवादित, लेक्सिकन बुक्स, नयी दिल्ली 2011, पृ. 312, 316.
14. यंग इंडिया में प्रकाशित गाँधीजी का लेख (29 जुलाई 1920).